दीपावली 2020

दुष्ट कोविड से हुई निखिला धरा आक्रांत ।

खो चुकी अधिसंख्य जनता स्वजन प्रियतर कान्त ।।

बच गए जो हैं विषादित देह मन हैं क्लांत ।

आज भी औषधि विषय में विज्ञ भी हैं भ्रांत ।।

बुझ गये अनगिनत घर के हन्त ! देखो दीप ।

हो गये लोचन किसी के ज्यों अमौक्तिक सीप ।।

विगत नव उत्साह जन फिर भी जलाकर दीप ।

खोजते से व्यग्र जल निधि मध्य आशा द्वीप ।।

पुनः प्रकटित हो मही पर वही श्री अभिराम ।

जगमगाएं पुनः बहुशः दीप से फिर धाम ।।

शांति आये लोक मन में पुनः मुख पर हास ।

सिंधुजा का बने फिर हर निलय चिर आवास ।।

विजित रिपु निज गेह लौटें हमारे बहु राम ।

जो बने हैं सजग प्रहरी देश के गत काम ।।

लुप्त हो प्रतिकार पाकर आसुरी सब शक्ति ।

वितत हों फिर देश में सुख शांति श्री शुभ भक्ति ।।

सर्वतः करता समुन्नति गगन तक उत्कर्ष ।

विश्व गुरूता को पुनः हो लब्ध भारत वर्ष ।।

आपका सकुटुंब हो मंगल हरेक प्रकार ।

बढें नव उत्साह अन्वित क्षिप्त चिंता भार ।।

11-11-2020 - शिव कुमार मिश्र

भोपाल